दिनांक :- 24-04-2020

कॉलेज का नाम:- मारवाड़ी कॉलेज दरभंगा।

लेखक का नाम:- डॉ० फारूक आजम (अतिथि शिक्षक)
स्नातक :- द्वितीय खंड कला
विषय :- प्रतिष्ठा इतिहास
इकाई :- दो
पत्र :- चतुर्थ
अध्याय :- द्वितीय अफीम युद्ध (1856)

तिन्तसीन की संधि (Treaty of Tientsin) -1858 मे विजयी राष्ट्रो (ब्रिटेन और फ्रांस) ने चीन से तिन्तसीन की संधि की। संधि की निम्नलिखित शर्तो के अनुसार -

(क) चीन से ग्यारह नए बन्दरगाह व्यापार के लिए खोल दिए।

(ख) पश्चिमी देशो को पीकिंग मे राजदूत रखने का अधिकार दिया गया।

(ग) विदेशियो को चीन के आन्तरिक भागो मे यात्रा करने की सुविधा दी गई।

(घ) धर्म प्रचारको के मामलो मे भी विदेशियो के देशोत्तर अधिकारो संपूर्ण व्याख्या की गई।

(च) ब्रिटेन को 40 लाख तास्ल और फ्रांस को 20 लाख तास्ल युद्ध क्षतिपूर्ति के रूप मे दिए गए।

(5) फौजदारी के मामलो में भी विदेशियो के देशोत्तर अधिकार की संपूर्ण व्याख्या की गई।

(6) अफीम को सीमा-शुल्क में सम्मिलित कर इसके व्यापार को वैध घोषित किया गया।

पीकिंग समझौता - उपर्युक्त तिन्तसीन संधि-शर्तो को पीकिंग की सरकार ने स्वीकार नही किया। ऐसी स्थिति में पुनः युद्ध प्रारंभ हो जाना स्वाभाविक था। इस बार फ्रांस और इंग्लैंड युद्ध करते हुए पीकिंग तक पहुँच गए। मंचू सम्राट सिएन फेंग (Hsien feng) को पीकिंग से भागकर जेहोल (Zehol) में शरण लेनी पड़ी। सम्राट का महल जला दिया गया। राष्ट्रीय संग्रहालय और पुस्तकालय नष्ट कर दिये गये तथा नगर को लूट लिया गया। चीनी सम्राट ने विवश होकर तिन्तसीन-संधि शर्तो को मान लिया। अतः 1860 में इंग्लैंड, फ्रांस अमरीका रूस के साथ पीकिंग समझौता हुआ। इनमें निम्नलिखित बाते थीं।

तिन्तसीन को भी विदेशी व्यापार के लिए खोल दिया गया।

यह नगर पीकिंग के निकट था अतः विदेशी प्रभाव चीन की राजधानी पर छा गया।

(2) हांगकांग के निकट कौलून प्रायद्वीप ब्रिटेन के हवाले कर दिया गया।

(3) पिकिंग में एक स्थायी ब्रिटिश प्रतिनिधि के निवास की व्यवस्था की गई।

(4) 1724 में जब्त की गई ईसाई संपत्ति को रोमन कैथोलिक चर्च लौटाने का वचन दिया गया। फ्रांसीसी पादरियों और धर्म-प्रचारकों को कभी भी जमीन खरीदने या किराया लेने का अधिकार दिया गया।

(5) चीनी कुलियों को क्यूबा या बाहर विदेशों में जाने को वैध घोषित किया गया।

इस प्रकार पिकिंग समझौते ने चीन के द्वार पश्चिम के लिए पूर्ण रूप से खोल दिए।

पश्चिम के व्यापारी और धर्मप्रचारक चीन का शोषण करने लगे वे स्वच्छन्द विचरण करने लगे तथा किसी भी चीनी पदाधिकारी से थोड़ा-सा मनमुटाव होते ही सीधे केन्द्र से उसके स्थानान्तरण की माँग करने लगे चीन के उन्मुक्त बन्दरगाहों पर शहर

Scanned with CamScanner

के बाहर उनके आली - शान निवास-स्थान बन गए। उन्होंने अपनी बस्तियों के प्रबंध के लिए नगरपालिका परिषद की स्थापना भी कर ली। यह स्थिति चीन के लिए अत्यंत घातक थी। 1840 और 1860 के बीच विदेशी शक्तियों के साथ चीन का जो संघर्ष हुआ, उसने रूस को भी चीन में हाथ-पांव फैलाने के लिए प्रेरित किया। 1847 में जार निकोलस प्रथम ने काउंट मुराविएव (Count Muraviev) को पूर्वी साइबेरिया का गवर्नर नियुक्त किया और अमुर घाटी के सर्वेक्षण का आदेश दिया। अगस्त, 1850 में मुराविएव ने आमूर नदी के मुहाने पर निकोलाइवेस्क नामक नगर की स्थापना की तथा 1853 में सखालीन द्वीप पर अधिकार कर लिया। 1860 तक चीन के तीन लाख पचास हजार वर्गमील भूमि पर रूस का अधिकार हो गया।

इस प्रकार 1840 से 1860 तक चीन को विदेशियों के साथ दो युद्धों में फैलना पड़ा और दोनों में उसकी पराजय हुई। 1861 तक चीन

का द्वार पूर्ण रूप से विदेशियों के लिए खुल गया। चीन के सौलह बन्दरगाह पश्चिमी देशों को व्यापार के लिए खोल दिए गए। पश्चिमी विदेशियों को चीन में व्यापार करने की पूरी छुट मिल गई। अहे राज्य क्षेत्रातीत अधिकार एंव धर्म-प्रचार की स्वतंत्रता भी मिल गई। चीन की क्षेत्रीय अखंडता और स्वतंत्रता खतरे में पड़ गई। यहाँ यूरोप के नवीन साम्राज्यवाद ने अपना जाल फैलाना शुरू किया। चीन की लूट-खसोट शुरू हो गई।

अध्याय-3

अध्याय - तैपिंग विद्रोह

19वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में चीन को अनेक संकटों का सामना करना पड़ा। ये संकट मुख्यतः पश्चिमी देशों के संपर्क के परिणाम थे। पश्चिमी देशों ने अपनी साम्राज्यवादी स्वार्थपूर्ति के लिए बलपूर्वक चीन का दरवाजा खोल दिया। अफीम युद्धों में चीन पराजित हुआ तथा उसे 1842 की नानकिंग तथा 1858 की तिन्तसीन की अपमानजनक संधियाँ करनी पड़ी। इनके फल

स्वरूप चीन मे पश्चिमी साम्राज्यवादी देशो का जाल बिछ गया। इसकी संप्रभुता पर आँच आई। मंचू राजवंश के राजनीतिक उपाख्यान का जनाजा निकल गया। चीनियो को यह समझने में देर नही लगी कि मंचू राजवंश निःशक्त है अतः देश मे घोर निराशा और असंतोष का वातावरण छा गया। तेपिंग विद्रोह को जन्म दिया। इसके निम्नलिखित कारण थे।

(1) विद्रोह की परम्परा - चीन में विद्रोह परम्परा काफी प्राचीन है। छठी शताब्दी ई० पू० में ही कन्फ्यूशियन्स ने कहा था कि जनता ही संप्रभु है, राजा उसका सेवक है तथा उसके कुशासन से बचने के लिए प्रजा विद्रोह कर सकती है। चीन के सभी लोग अपने को राष्ट्रीय परिवार (कुओचिया) का सदस्य मानते थे जिनका मुखिया सम्राट था। वह नैतिक विधान तथा प्रकृति के मंगलमय समन्वय (थिएन) का प्रतिनिधित्व करता था। ~~छब~~ जब तक वह इस धर्म आदर्श का पालन करता था।

Scanned with CamScanner

राज्य में शांति-व्यवस्था तथा संपन्न बनी रहती थी। जब
वह इस पथ से विचलित हो जाता था तो राज्य में अकाल
बाढ़ महामारी का प्रकोप छा जाता था। ऐसी स्थिति में प्रजा
अपने राजा को गद्दी से उतार देती थी। इस तरह विद्रोह
परम्परा का आधार दैवी प्रकोप तथा जनता की संप्रभुता थी।
मंचू शासन के पूर्व चीन के अनेक विद्रोह हो चुके थे। इनके
मूल में प्रशासनिक भ्रष्टाचार से उत्पन्न, आर्थिक, सैनिक एवं
सामाजिक अन्याय थे। जनसंख्या को उत्तरोत्तर वृद्धि हो
रही थी, किंतु इसी अनुपात में खाद्यान्न नहीं बढ़ रहा था। 1812 में
चीन की जनसंख्या 36,25,67,182 थी। इतनी बड़ी आबादी
के लिए न पर्याप्त खाद्यान्न था और न जीविका के साधन ही
थी। दुःख स्थिति तो यह थी कि प्रशासन भ्रष्ट और असक्षम था
और न जीविका को लोगों पर करों का बोझ बढ़ता गया तथा
पदाधिकारी जनता का आर्थिक शोषण करते रहे।

Scanned with CamScanner